

Prof. N. R. Singh

T.D.C. Part II Economics (Hons)

Assistant Professor

Paper IV Public Finance

R.B.G.R. College, Mahanagar, Nagpur

Module 2, Public Expenditure

TOPIC - Wagner's views on Public Expenditureसार्वजनिक व्यय पर वैगनर का विचार

जर्मन अर्थशास्त्री वैगनर (Wagner) का विचार था कि आर्थिक विकास के कारण सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होना आवश्यक है। वृद्धि का यह अनुपात व्यय के रूप में परिवर्तित होने पर प्रति व्यक्ति उत्पादन बढ़ जाता है। इस प्रकार सकल राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने से कुल उपभोग में वृद्धि हो जाती है।

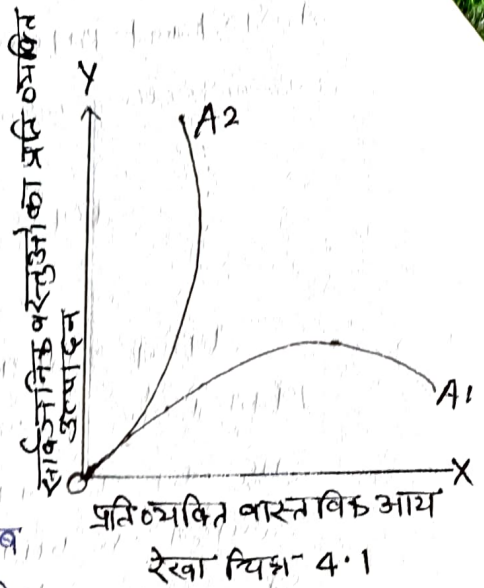
डॉक्टर के अनुसार वैगनर के निम्न तीन दशाओं में लागू होते हैं (i) आर्थिक प्रगति के कारण सार्वजनिक संस्थाओं की कार्य कुशलता निजी संस्थाओं से अधिक हो जाती है क्योंकि (अ) सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा उत्पादित माल अच्छी किस्म का होता है। (ब) बाजार में वस्तुओं की कमी नहीं हो जाती है तथा (स) सार्वजनिक क्षेत्र में पूर्ण आसानी से उपलब्ध हो जाती है। (ii) सार्वजनिक व्यय से ऐसी सेवाएँ उत्पन्न होती हैं जिनका उपयोग संपूर्ण समाज कर सकता है जैसे स्कूल, अस्पताल, पार्क, इत्यादि। (iii) इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी नवीन सेवाएँ जिनसे निजी संस्थाएँ नहीं कर सकती हैं उनका राज्य सम्पन्न कर सकता है। इस प्रकार सार्वजनिक व्यय में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है।

वैगनर से पूर्व रॉजिल का कहना था कि आय में वृद्धि होने से स्वाध्याय पर आय की लोच इकाई से कम हो जाती है अर्थात् व्यक्ति की आय में वृद्धि होने पर स्वाध्याय पर व्यय घटता है। इसका कारण है कि आय में वृद्धि होने से लोग स्वाध्याय के स्थान पर आरामदायक एवं विलासिता की वस्तुओं पर अधिक व्यय करने लग जाते हैं। वैगनर के मतानुसार सरकारी सेवाओं के लिए आय की लोच इकाई से अधिक होती है।

वैगनर के अनुसार राज्य की बढ़ती हुई गतिविधियों के कारण प्रति व्यक्ति आय और उत्पादन में जैसे ही वृद्धि होती है तो औद्योगिक देशों में सार्वजनिक क्षेत्र में आवश्यक रूप में कुल आर्थिक गतिविधियों के अनुपात में वृद्धि होती है। वैगनर की इस परिकल्पना को रेखाचित्र द्वारा

भी स्पष्ट किया जा सकता है।

रेखाचित्र में  $X$  अक्ष पर प्रति व्यक्ति आय तथा  $Y$  अक्ष पर सार्वजनिक वस्तुओं का प्रति व्यक्ति उत्पादन (Output) दर्शाया जाता है।



रेखाचित्र 4.1 में  $A_1$  वह स्थिति दर्शाता है जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र निश्चित समय में समाज के कुल आर्थिक उत्पादन को बनाये रखता है। दूसरे शब्दों में जब देश का आर्थिक विकास होता है तो प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि हो जाती है तो सार्वजनिक वस्तुओं का प्रति व्यक्ति उत्पादन आर्थिक गतिविधियों को समान अनुपात में बढ़ा देता है। स्थिर अनुपात को कैंगर के नियम को रेखाचित्र में दर्शाने के लिए संदर्भ बिन्दु की तरह प्रयोग किया जा सकता है जैसा कि रेखा  $A_2$  में दर्शाया गया है। तब  $A_2$  रेखा के साथ सार्वजनिक वस्तुओं के लिए उपयोग किये गये कुल गतिविधियों का समय के साथ साथ अनुपात होगा है।

समाज में जैसे जैसे प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है तो सामाजिक इजाजत वस्तुएँ जैसे संचार, यातायात, शिक्षा इत्यादि में निवेश बढ़ जाता है। इन वस्तुओं की उत्पादन लागत अधिक होती तथा सामूहिक रूप में इनका प्रयोग होता है। जब अर्थव्यवस्था में औद्योगिकरण की स्थिति बनती है तो कुछ समय बाद सार्वजनिक वस्तुओं का प्रति व्यक्ति उत्पादन प्रति व्यक्ति आय का अंश बन जाता है। यह स्थिति कैंगर की परिकल्पना को प्रस्तुत करती है।

सार्वजनिक व्यय में निरंतर वृद्धि होने का कारण  
(Causes for persistent increase in public expenditure)

कैंगर की परिकल्पना में सार्वजनिक व्यय में निरंतर वृद्धि होने के निम्न लिखित कारण हैं:—

(1) सामाजिक क्रियाकलापों में लगातार विस्तार:— कैंगर के अनुसार सामाजिक गतिविधियों में निरंतर विस्तार होने के कारण सार्वजनिक व्यय में वृद्धि एक मूल कारण है। पुराने समय में सरकार का मुख्य दायित्व आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा के साथ न्याय करना था किन्तु आज सरकार को अपने नागरिकों के लिए सुरक्षा, न्याय इत्यादि के अलावा सामाजिक कल्याण कार्य जैसे स्वास्थ्य शिक्षा, पानी विप्लवी, सड़क, पार्क आदि की करने पड़ते हैं। इसके अलावा



सांसाध्यिक सुरक्षा के सम्बन्ध में अनेक उपाय करने पड़ते हैं। व्यापारिक उतार-चढ़ाव को कम करने एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध होना भी सरकार का दायित्व है।

(2) **युद्ध तथा युद्ध के लिए तैयारी** :— वर्तमान समय में युद्ध एवं युद्ध की तैयारी के लिए सरकार को काफी राशि व्यय करना पड़ता है। कुल आय का लगभग 50 प्रतिशत भाग राष्ट्रीय सुरक्षा पर खर्च किया जाता है। प्रत्येक देश युद्ध की अपेक्षा से भयभीत रहता जिसके लिए उसे हर समय युद्ध के लिए तैयार रहना पड़ता है। वर्तमान में सरकार को न केवल मौजूदा को बनाये रखने में खर्च करना पड़ता है बल्कि उसे आधुनिक अस्त्रों को सुचारुगति करना पड़ता है। आधुनिक सैन्य वस्तुएँ दिन प्रतिदिन गंभीर होती जा रही हैं।

(3) **जनसंख्या एवं नगरीकरण का विकास** :— जनसंख्या विस्फोट अत्यधिक सित देशों में तेजी से बढ़ रही है। वही हुई जनसंख्या के लिए भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा, वस्त्र एवं आवास इत्यादि की व्यवस्था करनी पड़ती है। जिसके लिए सरकार को प्रतिवर्ष काफी राशि व्यय करनी पड़ती है। अजकम ग्रामीण जनसंख्या का पलायन शहरी की ओर बढ़ती जा रहा है जिसके कारण शहरी जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। वही हुई शहरीकरण के कारण लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं एवं सार्वजनिक निर्माण के कार्यों में सरकार का व्यय प्रतिवर्ष बढ़ता ही जा रहा है। इसके अतिरिक्त आधुनिक समाज ज्यादा जटिल होत जा रहे हैं, जहाँ उनकी माँगों को पूरा करने के लिए सरकार को काफी राशि व्यय करना पड़ता है।

(4) **मुद्रा में वृद्धि (Rising Prices)** :— वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होने से भी सार्वजनिक व्यय बढ़ा है। मूल्य बढ़ने से प्रचुरता सरकार को सभी वस्तुओं एवं सेवाओं को उच्चतर मूल्य देने पड़ते हैं जो कि उसे खरीदने होते हैं। द्वितीय सरकार को अधिक विस्तृत संसाधनों की आवश्यकता होती है। तृतीय निर्धन वर्ग की सहायता पहुँचाने के लिए सरकार को सरसत मूल्य पर वस्तुएँ उपलब्ध कराने के लिए राशन की दुकानें खोलनी पड़ती है।

(5) **जीवन की आधुनिक जटिलताएँ (Modern complexity of life)** :— आधुनिक जीवन अधिक जटिल हो गया है जिसके कारण लोगों की रुचि पेंसंद एवं फैशन तेजी से बदल रही है। इन जटिलताओं को सुलझाने के लिए सरकार को जनता के हित में बहुत से संस्थात्मक एवं गुणात्मक कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़ता है जिससे सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हो रही है।

(6) **आर्थिक निर्माण की भूमिका (Role of economic planning)** :— अधिकांश देशों के पास साधन सीमित होते हैं जिनका वे सर्वोत्तम उपयोग करना चाहते हैं। ऐसी दशा में वे आर्थिक निर्माण का सहारा लेते हैं। वही वही योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप



सार्वजनिक क्षेत्र में बढ़ी हो जाती है।

(7) सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका (Role of public sector) :- राष्ट्रीय हित में सार्वजनिक उपक्रम स्थापित करने पड़ते हैं किन्तु सार्वजनिक क्षेत्र की विडम्बना यह है कि अधिकांश उपक्रम बाढ़े में पड़ते हैं क्योंकि उनकी कुशलता निजी क्षेत्र की तुलना में कम होती है। प्रथम तो सार्वजनिक उपक्रमों को स्थापित करने में सरकार को काफी शक्ति व्यय करना पड़ता है तथा दूसरी उनको संचालन करने में भी व्यय करना पड़ता है। सरकार को सार्वजनिक हित मजदूर चलाना पड़ता है।

(8) प्रजातंत्र का भार (Burden of democracy) :- जिन देशों में प्रजातंत्र है वहाँ केन्द्रिय राज्य एवं स्थानीय सरकारी को चलाने के लिए चुनाव एवं उपचुनाव करने पड़ते हैं। इसके अलावा सरकार को चयन के लिए बड़ी मात्रा में शक्ति व्यय करना पड़ता है।

सिद्धान्त की आलोचना

Criticism of the theory

श्री पीकाक एवं वाइथमैन ने इस सिद्धान्त की निम्न आधार पर आलोचना की है :-

(1) अन्तर अनुशासनीय कमी :- यह सिद्धान्त आकस्मिक स्थितियों पर विचार करता है जो औद्योगिकता और आर्थिक विकास के दौरान संदर्भित विस्तृत होते हुए सार्वजनिक क्षेत्र के सजीव निर्धारण का निर्माण करता है। इस प्रकार इसके विवेचनात्मक ढाँचे में अन्तर अनुशासनीय संबंधों की कमी है। अन्य विज्ञान जैसे राजनैतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र के सार्वजनिक क्षेत्र के सिद्धान्तों को इसमें शामिल नहीं किया गया है।

(2) विस्तृत विश्लेषण की कमी :- यद्यपि इस सिद्धान्त में महत्वपूर्ण संविदासित तथ्यों का वर्णन किया गया है किन्तु इसके विस्तृत विश्लेषण की कमी है।

(3) भ्रष्ट प्रभाव की अपेक्षा :- आधुनिक युग में भ्रष्ट पर किया गया सार्वजनिक क्षेत्र महत्वपूर्ण होता है किन्तु इसी सिद्धान्त में अपेक्षा की गयी है।

(4) पश्चिमी देशों का स्वीकार्य नहीं :- पश्चिमी देशों में आर्थिक उन्नति तेजी से हुई है ऐसी दशा में यह सिद्धान्त इन देशों में स्वीकार्य नहीं है।

End

N. R. Rana